भारतीय इतिहास
विकृतिकरण के प्रयास

लेखक

प्रो. के. नरहरि

संरक्षक

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

अनुवादक

पी.एस. चन्द्रशेखर

वरिष्ठ पत्रकार

प्रकाशक

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13,

कृष्णा गली नं. 9, मौजपुर, दिल्ली-110053

दूरभाष : 011-22914799

website: www.abrsm.in, www.abrsm.co.in

Email: abrsmdelhi@rediffmail.com, abrsmdelhi@gmail.com

भारतीय इतिहास
विकृतिकरण के प्रयास

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

❖ प्रकाशन दिवस :
विजयादशमी, विक्रम संवत् 2069, युगाब्द 5114

❖ द्वितीय संस्करण :
संशोधित एवं परिवर्धित

❖ सहयोग राशि : 20 रुपये

❖ अक्षर संयोजन :
सागर कम्प्यूटर्स, जयपुर

❖ मुद्रक :
कुमार एण्ड कम्पनी, जयपुर

❖ प्रकाशक :
अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

प्रकाशकीय

अ.भा.राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के दीर्घकाल तक अध्यक्ष रहे और वर्तमान में संरक्षक प्रो. के.नरहरि जी ने भारतीय इतिहास के विकृतिकरण के प्रयासों के संबंध में अनेक व्याख्यान दिए हैं। अनुभव यह रहा कि लोगों को वास्तविक इतिहास का प्रायः कोई विशेष ज्ञान नहीं है लेकिन वे उसे जानना चाहते हैं। वास्तविक इतिहास सुनकर या पढ़कर वे रोमांचित होते हैं, आनंदित होते हैं। उनके व्याख्यानों को पुस्तक रूप देने का व प्रचारित करने का संकल्प अ.भा.राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ ने किया है।

भारत के जो हितैषी नहीं रहे वे भारत का वास्तविक इतिहास सामने लाने में अनुकूल नहीं रहेंगे, यह बात सहज ध्यान में आ सकती है। अंग्रेज सत्ता में थे, अपना राज्य कायम रखना उनका उद्देश्य था। वे भारत के सही पराक्रम का, सतत संघर्ष का, भारत के गौरव का इतिहास भारतीयों को बताएंगे, यह कल्पना करना भी मूर्खता है। वामपंथियों को रूस की राय सर्वोपरी थी। भारत स्वतंत्र हुआ अथवा नहीं इस विषय का निर्णय 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी वे नहीं कर सके। वे उसका निर्णय करवाने के लिए रूस में गये थे। यह बात अब काफी लोग जानते हैं। वे भारतीय इतिहास को वर्ग संघर्ष के रूप में सामने लाने की उधेड़बुन में लगे रहे हैं। वे वास्तविक इतिहास नहीं, कम्युनिस्ट विचारों के ढाँचे में ठूंसा हुआ इतिहास कहने के इच्छुक हैं। मुस्लिमों को अपने साथ स्वातंत्र्य संग्राम में जोड़ने के हेतु व स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् मुस्लिम वोट बैंक पक्का करके सत्तासीन होने के लोभ में अंधे लोगों ने तुष्टिकरण हेतु भारत का सही इतिहास सामने आने नहीं दिया। परिणाम आज सामान्य व्यक्ति से सत्तासीन उच्चपदस्थ व्यक्तियों तक बहुसंख्यक लोग राष्ट्रीय भावना, संघर्ष, समर्पण, त्याग आदि भावों से बहुत दूर होते गए हैं।

अ.भा. राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का प्रयास है कि शिक्षा क्षेत्र को दिशाहीन करने वाली इस स्थिती को बदलकर शिक्षा क्षेत्र को फिर से तेजस्वी, प्रखर स्वाभिमान युक्त और राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत करने की दिशा में शैक्षिक संगठन और अधिक सक्रिय हों। इसी क्रम में प्रो. के. नरहरि जी की यह पुस्तक अब आपके हाथों में हैं, एतदर्थ प्रो. के. नरहरि जी को साधुवाद।

– प्रकाशन समिति

भारतीय इतिहास-विकृतिकरण के प्रयास

अंग्रेजों के प्रवेश के पूर्व भारत की विकसित सभ्यता

फिरंगी जब पहली बार यहाँ आए थे तब वे अपनी कल्पना से भी पूरे उन्नत भारत को देख कर दंग रह गए थे। क्योंकि तब सामाजिक व भौतिक विज्ञान, औद्योगिकी, तत्वज्ञान, कला, न्यायशास्त्र, कृषि तथा अन्यान्य शास्त्रों में, सभ्यता में भारत अंग्रेजों की कल्पना से भी अधिक उन्नत स्थिति में था। सच्चाई यह है कि अंग्रेजों ने ही भारत से बहुत कुछ सीखा था। सन् 1800 के पहले ही मद्रास (चेन्नै) के तत्कालीन गवर्नर ने इंग्लैण्ड के कमतर दर्जे के कृषि संबंधी औजारों को सुधारने के लिए नमूने के तौर पर भारत से खेती-बाडी के औजारों को इंग्लैण्ड भेजा था। 16 वीं शती में पुर्तगाली और डचों ने भारतीय वनस्पति शास्त्र संबंधी पुस्तकों को यूरोप भेजा था। बर्फ बनाने का तंत्र, इंजेक्शन, (टीका लगाना) भवन निर्माण संबंधी सामग्री, उद्योग के लिए आवश्यक रसायन, फौलाद बनाने का तरीका, भारतीय वैद्यक, कपड़ा निर्माण आदि के तंत्र-ज्ञान को अंग्रेज भारत से ही यूरोप ले गए थे। एक अंग्रेज गवर्नर ने कहा था कि एक 14 वर्ष के भारतीय छात्र में गणित या अन्य शास्त्रों के संबंध में जितना ज्ञान होता है, उतना ज्ञान इंग्लैण्ड के छात्रों में कल्पना से परे की बात है। इंग्लैण्ड के दो नागरिक जोसेफ लेंकास्टर और आंड्रूबेल ने भारतीय शिक्षा पद्धति का गहरा अध्ययन किया तथा इसे मॉनिटोरियल पद्धति के नाम से इंग्लैण्ड में अमल में लाए, इसका वहाँ अच्छा परिणाम हुआ। 1742 में इंग्लैण्ड में छात्रों की संख्या 40,000 के मुकाबले 1851 तक बढ़ कर 21,44,000 हो गई थी, इस कार्य के लिए इंग्लैण्ड के नागरिकों ने आंड्रूबेल के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की थी, इसका पुख्ता सबूत है। सन् 1851 तक इंग्लैण्ड में प्रौढ शिक्षा स्तर पर गणित पढ़ाया ही नहीं जाता था।

अंग्रेजों के तीन प्रकार के प्रयत्न

जाने माने गांधीवादी श्री धरमपाल जी अपने Despoliation and Defaming India [Bharat Peetam Wardha Publication] नाम की किताब में लिखते हैं उनके अनुसार, अंग्रेज भारत के ऊपर अपना नियंत्रण पाने के लिए तीन प्रकार की कोशिश करते हुए नजर आते हैं।

उसकी गणना इस प्रकार कर सकते हैं जैसे-

1. अपने आगमन से पहले भारत में विद्यमान ग्रामीण केन्द्रित प्राथमिक और प्रौढ

शिक्षा को सरकारी विद्यालय में बदल कर उन्हें अपने नियंत्रण में करके यहाँ भारतीय परंपरा के प्रति कुठाराघात करना ही उनका उद्देश्य था और शिक्षण में पाश्चात्य परंपरा को महत्त्व देना।

2. पूरे भारत को इसाई धर्म में बदलना।

3. जो लोग इन दोनों प्रकारों का विरोध करें, उन्हें प्रताड़ित करके अपने रास्ते पर लाना।

पूरे भारत को इसाई धर्म में बदलना

1813 के जून और जुलाई महीने में इंग्लैण्ड के 'हाउस आफ कॉमन्स' में भारत की निन्दा अति गिरी हुई सोच से अनेक लोगों ने अपना वक्तव्य दिया था। जिसका प्रधान उद्देश्य था कि भारत का जो नाम परंपरा से आया हुआ है उसकी निन्दा करना, भारत का अपमान करना। जितना हो सके उतनी भारत के प्रति गलत कल्पना देना ही प्रचलित सभा का सारांश था।

भारत के लोग क्रूर, वे बिलकुल अमानवीय, असंस्कृत एवं अनागरिक, विज्ञान तथा तंत्रज्ञान में उन्हें कोई जानकारी नहीं है, इस तरह की कल्पना पैदा करके दुनिया में भारत का स्थान नीचा करना ही एक प्रधान उद्देश्य माना गया था। ऐसे बुरे प्रचार करने वालों में विलियम विल्बर फोर्स, जेम्स मिल और टी.बि मेकाले प्रमुख थे। ये लोग इतने नीचे विचार वाले बन गए थे कि पूरे भारत को सुधारने के लिए एक ही रास्ता है, इस देश को इसाई धर्म में बदल डालो। ये सब विचार उपर लिखित पुस्तक में दिया गया है। इस चर्चा का अंतिम परिणाम ऐसा निकला कि 'हाउस ऑफ कामन्स' में पूरे भारत को इसाई धर्म में बदलने का निर्णय लिया गया था कि यह निर्णय राजकीय दृष्टि से एक आवश्यक कदम माना जाता था। इसका परिणाम यह हुआ कि पहले जहाँ ईस्ट इंडिया कम्पनी कार्यरत है वहाँ इसे परिचित करवाया, बाद में जब पूरा भारत का अधिकार या शासन अंग्रेजों के हाथ में जब आ गया तब पूरे भारत को इसाई धर्म में बदलने के निर्णय को लागू कर दिया गया। इसके लिए इसाई मिशनरियों के लिए इसाई मत के प्रसार के लिए उनके शिक्षण संस्था में पूरी सुविधा मुहैया करवाना तथा चर्च जहाँ इसाई धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए शाला, कॉलेज है वहाँ भी धर्म प्रसार का केन्द्र शुरू करना, इन सभी जगहों में सभी तरह की सुविधा के लिए सरकारी स्तर पर एक विभाग भी खोला गया। 15 अगस्त 1947 तक यह विभाग जीवित था। कुल मिलाकर भारतवासियों को अपने देशप्रेम से वंचित करने के लिए यह अत्यंत सहायक था, इसमें कोई संदेह नहीं है।

भारत के लोगों को हिंसा मार्ग अपनाकर कुचलना

अंग्रेज भारत के अनेक प्रदेशों में जानबूझकर अकाल की स्थिति पैदा करें ताकि इससे लोग बिना जल तथा आहार से मर जाएँ। स्वतंत्रता संग्राम के समय अंग्रेजों के आक्रमण से शहीद हुए भारतीयों की गिनती उन्होंने कहीं भी नहीं दिखाई। उसे अपने रिकार्ड में भी नहीं रखा। बहुत खोज के बाद अंदाजा लगाया था कि 1857 से लेकर 1947 तक अंग्रेजों के हिंसा से पीड़ित होकर शहीद होने वालों की संख्या लगभग 3 लाख बताई गई है। यह सच नहीं है कि हमें स्वातन्त्र्य अहिंसा मार्ग से मिला है।

शिक्षण में विकृतीकरण

भारत में आंग्ल सरकार के द्वारा स्थापित शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष थे टी.बी. मैकाले। उन्हें यह जिम्मेदारी दी गई थी कि वे शिक्षा को किसी भी तरह बदलने के लिए स्वतंत्र थे, जिससे अंग्रेजों को अनुकूल परिणाम मिल सके। इस आजादी से मेकाले ने यह स्पष्ट किया कि वह शिक्षण में किस तरह का बदलाव लाएगा।

अब हमें समझ में आ रहा है कि भारत के लोगों को काले अंग्रेजों में बदलने में उनका उपाय सफल हुआ। हम आक्रमणकारियों (Colonialism) के विरोधी हैं ऐसे कहकर लोगों को मूर्ख बनाकर काले अंग्रेजों जैसे वेश धारण करके लोगों को धोखा देने वाले वामपंथी तथा विकृत बुद्धिजीवी, भारत देश के विरोधी एवं अंग्रेजों के गुलाम बनकर काले अंग्रेजों जैसे जीवन गुजारने वालों की संख्या की कोई कमी नहीं थी।

भारत को स्थाई रूप से अधीन रखने का अंग्रेजों का षड़यन्त्र

अंग्रेज सदैव श्रेष्ठ सभ्यता, सुसंस्कृत परम्परा, उन्नत ज्ञान, उच्च विज्ञान व तंत्रज्ञान से परिपूर्ण इस देश को अपने कब्जे में बनाए रखना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने जन सामान्य को बौद्धिक रूप से और सांस्कृतिक, आर्थिक विकास के प्रति भावनात्मक ढंग से, सामाजिक रीति से परम्परागत भारतीय जड़ों से काट कर अलग करने का कुचक्र रचा था। इसी उद्देश्य को लेकर गठित शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष थॉमस बैबिंगबन मेकाले ने अपने उद्देश्य को स्पष्ट शब्दों में लिखा था, ''अपने सीमित संसाधनों को देखते हुए सभी भारतीयों को यूरोपीय पद्धति से शिक्षा देना असंभव है। इसलिए हमें अपने विचारों को करोड़ों लोगों तक पहुँचाने वाले बिचौलिए भाष्यकारों की एक टोली के निर्माण के बारे में चिंतन करना चाहिए। वे (भारतीय) केवल शक्ल और रंग से भारतीय दिखें पर उनकी अभिरुचि, विचार, नीति और बुद्धि अंग्रेजियत से भरपूर हों।''

अंग्रेजों के द्वारा इतिहास को विकृत करने का प्रयत्न

भारत में अंग्रेजों ने इस उद्देश्य को सामने रखते हुए सन् 1835 में, टी.बी. मेकाले के मार्गदर्शन में अपनी नई शिक्षानीति को निरूपित किया। इस नीति को क्रियान्वित करने की दिशा में उन्होंने जो मार्ग अपनाया उसका थोड़ा सा ब्यौरा निम्न प्रकार है:-

1. सबसे पहले फिरंगियों ने भारत का नाम बदल कर इंडिया कर दिया। भारत जैसे नाम के साथ जुड़ा भावनात्मक संबंध इंडिया के साथ जुड़ नहीं सकता। भारत माता की जय कहने पर जो पुलक हृदय में उत्पन्न होती है वह इंडिया माता की जय कहने पर हर्गिज उत्पन्न नहीं हो सकती। भारत के साथ यह जो भावनात्मक संबंध है उसे समाप्त करने की दिशा में किए गए कुकर्मों का यह एक उदाहरण मात्र है।

2. अंग्रेजों ने जिन मिथ्या आरोपों की सृष्टि की उनमें दूसरा उदाहरण यह है, ''अंग्रेजों के भारत आने के पूर्व यहाँ के लोग क्रूर, दुरभिमानी, निर्दयी और असभ्य थे। विज्ञान, तंत्रज्ञान से रहित इन मूढ़ों को अंग्रेजों ने ही विज्ञान, तंत्रज्ञान से अवगत कराया। क्योंकि इन अज्ञानियों को सुसंस्कृत बनाने की जिम्मेवारी अंग्रेजों पर आ पड़ी है। It is a white man's burden, ईश्वर की अपार कृपा है कि (Devine dispensation) वे (अंग्रेज) जंगली भारतीयों के उद्धार के लिए भारत आए हैं।'' भारतीयों के मन में हीन भावना उत्पन्न करना ही अंग्रेजों का ध्येय था। गोरे सिखाने वाले, हम सीखने वाले, वे ज्ञानी हम अज्ञानी, वे देने वाले हम लेने वाले, इस तरह हमारे मन में हीन भावना उत्पन्न करने का निरंतर प्रयत्न किया जाता रहा।

3. भारत के परम्परागत ज्ञान, विज्ञान तंत्रज्ञान, तत्वज्ञान आदि अन्य समस्त शास्त्र संस्कृत ग्रंथों में हैं। संस्कृत, उपरोक्त ज्ञान-भंडारों तक पहुँचने की एकमात्र सीढ़ी है। अतः संस्कृत के प्रति उपेक्षाभाव उत्पन्न करने के लिए उसे मृत भाषा के रूप में प्रचारित करने का विशेष अभियान उन्होंने चलाया। फिरंगियों ने अपनी चिरपरिचित ''फूट डालकर राज करने'' की नीति के अनुसार संस्कृत को केवल उच्च वर्ग की भाषा के रूप में भी प्रचारित किया। लेकिन असलियत यह है कि महाभारत के प्रणेता वेदव्यास धीवर थे, रामायण के रचयिता वाल्मीकि भील थे, महाकाव्यों के निर्माता कालिदास गड़रिया थे। इस तरह संस्कृत के मूल साहित्य के निर्माताओं में कोई भी अंग्रेजों के वर्ग विभाजन के अनुसार तथाकथित उच्च वर्ग से नहीं था। तिसपर भी अंग्रेजों ने दुष्ट उद्देश्य से कुप्रचार करके संस्कृत भाषा के प्रति घृणा और अंग्रेजी के प्रति व्यामोह उत्पन्न करके उसे प्रतिष्ठा दिलाने की दिशा में ही कार्य किया। संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति फिरंगियों ने जो दुष्प्रचार किया उसकी कुछ बानगी इस प्रकार है-